

सने तस्य (I) 5119. im instr.: न स शोचेत्कृताकृतैः (कृताकृतम् die neuere Ausg.) HARIV. 291. im acc. mit प्रति: मा त्वं शुचस्तां प्रति MBu. 3, 15681. gew. im blossen acc. trauern über, beklagen, bedauern: ऋषेः पुत्रं तमथो वापि पौत्रं कथं न शोचयेमर्हं न ह्यमाम् MBu. 1, 3231. 3, 331. 2295. न शोचाम्यहमात्मानं न चान्यदपि किं च न 2372. अशोचन् (शोचते ed. Bomb.) वैशंसं कृतम्। धातरं पितरं पुत्रं सखायं च 2507. R. 1, 2, 31. 2, 52, 21. 64, 17. 74, 19. R. GORR. 1, 2, 18. Spr. (II) 723. स्वं वपुः KATHAS. 4, 42. 22, 180. MĀK. P. 22, 29. शोचिमी aus metrischen Rücksichten MBu. 3, 2372. शुशोच RAGH. 2, 37. मा शुचस्त्वमनागतान् (अर्थान्) Spr. (II) 676. BULG. P. 1, 13, 39. 4, 8, 68. गतान्स्मान् शोचिष्यति R. 2, 46, 4. त्वं मिथ्या-वयवांस्तुनानां शोचिष्यसि ध्रुवम् RĀGĀ-TAR. 4, 299. नैनं शोचितुमर्हसि BULG. 2, 26. R. 2, 72, 25. Spr. (II) 3596. शोचिवा R. GORR. 2, 37, 1. शोचसे MBu. 3, 2644. शोचि BULG. P. 7, 9, 43. शोचमान MBu. 3, 2016. 12260. PAÑKAT. 35, 7 (hier befremdet med.).

— caus. 1) in *Flammen setzen, brennen* (trans.): ब्रह्मद्विषे शोचय ताम्पथं RV. 6, 22, 8. TBa. 1, 1, 2. — 2) in *Schmerz versetzen*: कृदिम् AV. 6, 89, 1. 2. ÇAT. Br. 1, 4, 2. 9. MBu. 4, 581. 7, 2695. — 3) *Schmerz empfinden, trauern* MBu. 1, 5649. Spr. (II) 4293. trans. bedauern, beklagen Jmd oder Etwas; pass. शोच्यते Spr. (II) 263, v. I. 3884. RAGH. 8, 62. RĀGĀ-TAR. 3, 136. — 4) *reinigen* (vgl. शुचि): दूषितं तृणतोषादि प्रतियोगैश्शोचयत् KATHAS. 19, 84.

— desid. शुशुचिषति und शुशोचिषति P. 1, 2, 26.

— intens. 1) *hell leuchten, — strahlen, — flammen*: ये अग्नौ न शोषु-चन्निधानाः RV. 6, 66, 2. partic. शौशुचत् 48, 3. 10, 82, 20. 89, 12. शौशुचान 4, 1, 4. 7, 10, 1. — 2) *heftigen Schmerz empfinden*: शोशुच्यमान BHATT. 3, 12.

— अनु 1) *schmerzliche Sehnsucht empfinden nach* (acc.), trauern um AV. 6, 130, 1. MBu. 1, 1040. 1845. 4967. 3, 2645. 2725. 15764. 16839. R. 2, 34, 4. 46, 6. 8. 63, 29. Spr. (II) 722. 913. 1998. नष्टे मृतमतिक्रान्तं ना-नुशोचति पण्डिताः 3473. (I) 5108. RĀGĀ-TAR. 3, 292. °शोचती HARIV. 9235. R. 3, 52, 14. °शोचितुम् BULG. 2, 25. R. 5, 71, 7. Spr. (II) 4561. °शोचे BULG. P. 3, 1, 41. °शोचस्व Spr. (II) 913, v. I. अन्वशोचत MBu. 1, 4634. mit loc. Spr. (II) 3566. mit gen. BULG. P. 9, 19, 2. mit इति R. 2, 52, 27. ohne Ergänzung Spr. 3026. MBu. 1, 5647 (med.). — 2) in *Jmdes* (acc.) *Schmerz einstimmen, mit Jmd zugleich Schmerz empfinden, — trauern*: शोचती ज्ञायामनुशोचति BULG. P. 4, 25, 61. — Vgl. अनुशोचन. — caus. betrauern, bedauern: पितरावनुशोच्य KATHAS. 10, 67. 21, 129. मुहुरित्नुशोचिताः MBu. 2, 2594.

— समनु *Schmerz empfinden um* (acc.), betrauern, bedauern MBu. 4, 565.

— अप intens. durch *Flammen vertreiben*; partic. अप नः शोशुचद्यम् RV. 1, 97, 1; vgl. VS. 33, 6. JĀN. 3, 3.

— अग्नि 1) in *Gluth setzen, verbrennen*: ब्रह्मद्विषमभि तं शोचतु द्यौः RV. 6, 82, 2. 10, 16, 1. मैनां तपसा मार्चिषाभि शोचोः VS. 12, 15. KĀTJ. Ça. 6, 10, 3. — 2) *brennen so v. a. quälen* AV. 4, 26, 7. VS. 11, 45. KĀTJ. Ça. 6, 10, 3. — 3) *Schmerz empfinden, trauern* MBu. 12, 11242. — Vgl. अभिशोक fgg. — caus. in *Gluth versetzen, verbrennen, quälen*: (अप्रयः) मा त्वमिष्टशुचन् VS. 35, 8. TS. 5, 1, 5, 6. Vgl. अभिशोचयिषु. — intens. dass.: अग्नि शोशुचानः RV. 10, 87, 9. 14.

— आ herstrahlen: अग्रे शुशुचद्या रयिम् RV. 1, 97, 1. — Vgl. आशुशुचति.

— उद् caus. in *Flammen setzen* AV. 5, 22, 2. — Vgl. उच्छोचन.

— नि *brennend heiss sein*: निशोचति नितपति वर्षिष्यति impers. KĀND. Up. 7, 11, 1.

— निस् intens. med. *hervorstrahlen* RV. 7, 1, 4.

— परि *Schmerz empfinden, trauern* MBu. 1, 4025. BULG. P. 3, 30, 18. betrauern, beklagen; med. MBu. 3, 13657. 5, 5063. — caus. 1) *quälen, peinigen* MBu. 6, 1902 nach der Losart der ed. Bomb. — 2) *bedauern, beklagen*: भवन्ती °शोच्य R. GORR. 2, 66, 16.

— प्र *strahlen*: प्र यच्छोचन् धीतयः RV. 8, 6, 8. — Vgl. प्रशोचन.

— अनुप्र betrauern, beklagen: न त्वादृशी मर्त्यमनुप्रशोचते MBu. 1, 3229.

— सम् 1) *zusammenflammen*: नेदिमावग्नी संशोचातः ÇAT. Br. 8, 6, 2. 22. — 2) *betrauern, beklagen* MBu. 9, 1500. — 3) °शुच्यति *schmerzen*: यदुपनहस्य संशुच्यति ÇAT. Br. 6, 4, 20. — caus. betrauern, beklagen: °शोच्य MBu. 7, 10.

2. शुच् (= 1. शुच्) 1) adj. *flammend, leuchtend, strahlend*; s. त्रि°, विश्व°. — 2) f. a) *Flamme, Gluth*: शुचा शुचा मुमतिं रसि वस्वः RV. 3, 4, 1. शुचा विद्वा व्योषया AV. 3, 25, 4 (vgl. AIT. Br. 6, 35). VS. 13, 47, 17, 1. या ते वर्म दिव्या शुक् 38, 18. स ईश्वरः प्रज्ञाः शुचा प्रदहः TS. 5, 1, 5, 6. 2, 5. TBa. 1, 6, 2, 1. innere Wärme ÇAT. Br. 14, 1, 2, 13. 3, 2, 2. — b) *Brand des Innern*: Qual, Schmerz, Sorge, Trauer, Kummer (diese Bed. fliesst in der älteren Sprache häufig mit der ersten zusammen) AK. 1, 1, 2, 25. 3, 4, 32 (30 COLBR.), 18. H. 299. AV. 4, 38, 4. 5, 20, 3. 7, 100, 1. 12, 5, 34. TS. 1, 3, 9, 1. पशुं शुचार्ययेत् 5, 1, 4, 2. पशोर्वा अलब्धस्य प्राणाञ्कुर्वृक्षति 6, 3, 9, 1. ÇAT. Br. 3, 8, 5, 8. 9, 1, 9, 9. PAÑKAT. Br. 5, 10, 3. 8, 1, 9. शुचा वा एष विद्वा यस्य ज्योगामयति 12. शुचो गृहम् Spr. 5198. हृदि शुचं धत्ते 2887. शुचं विदधति VARĀH. BRH. S. 32, 4. G. शुचं जनयति 104, 9. प्राप शुचम् KATHAS. 16, 67. शुचमगात् 20, 96. शुचमेति Spr. (II) 2781. विजकौ शुचम् RAGH. 12, 75. विरक्तौ शुचम् ÇĀK. 94. शुचालम् DAÇAK. 73, 6. शुचा aus Trauer, vor Kummer RAGH. 8, 57. Spr. 2756. अस्मज्जन्योश्च ततः स्फुरितं हृदयं शुचा KATHAS. 2, 43. 41, 54. कन्याजन्मशुचा 28, 46. pl.: राज्ञो संज्ञिते शुचः MBu. 2, 2181. किमधिकरणाः सन्तु च शुचः Spr. (II) 5193. तनयकृताः शुचः VARĀH. BRH. S. 104, 14. उत्सारिता स्वाभूवन्नर्ग्यास्तत्तणं शुचः KATHAS. 18, 121. शुचा पात्रम् Spr. 2994. गुरुशुचो रोगस्य विश्रामभूः (II) 2641. अज्ञकाङ्कुचः BULG. P. 1, 13, 57. am Ende eines adj. comp.: गुरुतर° MBu. 86. व्यपगत° 74. विगलित° 89. ad 113. त्यक्त° RĀGĀ-TAR. 3, 105. स° Spr. (II) 937. — c) pl. *Thränen als Ausdruck des Schmerzes, — der Trauer*: शुचस्ते प्रमृतामि BULG. P. 1, 7, 16. 3, 18, 4. कृच्छ्रेण संस्तभ्य शुचः पाणिनामृष्य नेत्रयोः 1, 15, 3. 17, 8. मुञ्चन्मीलदृशा शुचः 3, 2, 5. — Vgl. मानस°.

शुचै 1) adj. (f. घ्रा) = शुचि RV. 10, 26, 6. — 2) f. घ्रा = शुच् *Trauer, Kummer*: शुचापक् BULG. P. 1, 6, 19. कोपामर्षशुचार्षित 4, 10, 4. मद्वयो-गशुचास्पद PAÑKAT. 1, 6, 2. शुचाकुल 7, 79.

शुचैदय (शुचस्, partic. von 1. शुच्, + रय) adj. *einen strahlenden Wagen habend* RV. 4, 37, 1. — Vgl. शोचदय.

शुचिर्त्ति (von 1. शुच्) m. N. pr. eines Mannes RV. 1, 112, 7.

शुचि (wie oben) UGÉVAL. zu UṆĀDIS. 4, 119. 1) adj. (f. शुचि; शुचो M. 8, 77) = *seht, dhvlt, silt* u. s. w. AK. 1, 1, 4, 22. 3, 4, 5, 29. H. 1392. an. 2, 60. MED. 1. 11. HALĀJ. 5, 22. = *medy, शुद्ध* AK. 3, 4, 5, 29. H. 1436. H. an.